मंजिल तक पहुंचाने वाला पथ है धर्मः आचार्यश्री महाश्रमण

आमेट में अमृत महोत्सव के अन्तर्गत द-र्नाचार पर साप्ताहिक प्रवचन माला के चौथे दिन मंजिल तक पहुंचाने वाला पथ विशय पर दिया प्रवचन, राग-द्वेश से दूर रहने वाली पद्धति उत्तम, जीवन विज्ञान विद्यार्थी सेमिनार आज, बी.ए.व एम.ए के छात्रों की संगोश्ठी कल

आमेट 20 जनवरी

तेरापंथ धर्म संघ के ग्यारहवें आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि मार्ग हमारे सामने है, लेकिन यह कैसा है। इसकी पहचान उस मार्ग पर चलने से ही संभव हो सकती है। अनेकों मर्तबा ऐसा होता है कि व्यक्ति को पथ में तरह-तरह की कठिनाईयों का सामना करना पड सकता है, पर इससे घबराने की बजाय डटकर मुकाबला करने की आव-यकता है। मंजिल इसी मार्ग से मिलने वाली हो तो हमें ऊबड-खाबड पथ पर चलने का साहस जुटाने की जरुरत है। यह सब धर्म के माध्यम से आसान हो जाता है।

आचार्यश्री ने उक्त विचार यहां तेरापंथ भवन के समीप अहिंसा समवसरण में अमृत महोत्सव के अन्तर्गत द-र्नाचार प्रवचन माला के तहत ;ुक्रवार को मंजिल तक पहुंचाने वाला पथ विशय पर श्रावक-श्राविकाओं को संबोध देते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि मंजिल नि-चित हो चुकी है और मार्ग बताने वाला भी मिल गया है तो हमें बिना किसी हिचक से इस ओर अपने कदम बढा लेने चाहिए। आदमी में चलने का पुरुशार्थ होना आव-यक है। गति मंद भले ही हो, लेकिन बंद न हो। गति तेज या मंद। यह आव-यक नहीं है इससे ज्यादा महत्वपूर्ण है गति है या नहीं।

उन्होंने पथ को परिभाशित करते हुए कहा कि यह एक धर्म है। वीतराग जिने-वर द्वारा बताया गया तत्व ही धर्म है। धर्म का एक प्रकार समता को माना गया है। धर्म को एक ही साधना से करने की अपेक्षा है। धर्म को जैसा रुप दोगे उसी रुप में वह हमारे सामने प्रकट होगा। धर्म एक है, लेकिन साधना करने का स्वरुप अलग-अलग हो सकता है। साधु और श्रावक इसका अनुसरण करते हुए साधना करें तो वह रत्नों की माला के समान बन जाता है। इसमें साधुओं की माला मोटी और श्रावकों की छोटी।

उन्होंने धर्म के तीन प्रकार बताते हुए कहा कि व्यक्ति को सदैव अहिंसा, संयम और तपस्या के प्रति जागरुकता बनाने की जरुरत है। इसी में इनके अनेक रुप समाहित है। ज्ञान धर्म, द-र्न धर्म, चारित्रिक धर्म, तप धर्म, अहिंसा, सत्य, :ाांति, मुक्ति, त्याग आदि को अलग-अलग तरीके से वर्गीकृत किया गया है। एक ही धर्म को अनेक रुप में विभाजित किया जा सकता हैं, लेकिन इन सब में वीतरागता का ज्ञान होना आव-यक है। धर्म भी वीतरागता का साधक है। धर्म, गुरु, साधना वीतरागता का ही रुप है। जैन धर्म के अनुरुप नवकार मंत्र में भी वीतरागता की उपस्थिति देखने को मिलती है। यह धर्म को संचालन करने वाला

साधक है और साधु वीतरागता के साधक है। धर्म का मूल तत्व वीतरागता है। अर्हम, साधु और सिद्ध में मंगल है। इन कारणों से वीतरागता समाहित है। यह अर्हत को प्राप्त होते है। इसलिए मनुश्य को धर्म में वीतरागता का अभ्यास करना चाहिए। साथ ही यह चिंतन करना चाहिए कि उसके भीतर वीतरागता का कितना अं-ा है। अगर इंसान में गुस्सा, अहंकार, ज्ञान की कमी और धन का लालच ज्यादा है तो उसे अत्यधिक वीतरागता की आव-यकता है। हम इंसान को धोखा देते है, स्पश्ट भाशा बोध की कमी रखते है, छलते है और कपट रखते है तो इसमें वीतरागता की कमी नजर आती है। उन्होंने मनुश्य से अपने जीवन का आत्म वि-लेशण करने का आह्वान करते हुए कहा कि हमारे जीवन में वीतरागता की उपस्थिति तभी जाहिर होगी जब मन में छल, कपट, जेवर, कपडा, मकान का लोभ नहीं आए।

समता ही धर्म

आचार्यश्री ने समता को ही धर्म के समान विवेचित करते हुए जीवन में इसकी साधना करने की आव-यकता प्रतिपादित की। साथ ही कहा कि साधना के माध्यम से हमें स्वयं का मानसिक विकास करना चाहिए। उत्तराध्यन, भगवती सूत्र जैसे ग्रंथों का अध्ययन करने से ज्ञान के साथ-साथ आध्यात्म की भी प्रेरणा मिलेगी। आध्यात्म की साधना ज्यादा से ज्यादा करनी चाहिए। प्रातः के सत्र में संयम की साधना और पवित्र भक्ति की आराधना करने से वैराग्य भाव में अपेक्षाकृत बढोतरी होगी। बच्चों और युवाओं को समय का अनाव-यक व्यय करने की बजाय इसका सदुपयोग करने का प्रयास करना चाहिए। धर्म की बातों को ग्रहण करें और उसी के अनुरुप जीवन का निर्वाह करने का श्रम करें। धर्म और अध्यात्म मंजिल की ओर ले जाने वाला पथ है। वीतरागता की तरफ ले जाने वाले मार्ग का विवेचन करने की आव-यकता है। स्वाध्याय को भी वि-िश्ट पथ माना गया है। नवकार मंत्र से परम कोई नहीं है। ध्यान में निर्विचार का विकास हो। यह उच्चकोटि का ज्ञान है।

मंजिल हो -िरोधार्य

आचार्यश्री ने विशय पर प्रवचन के बाद साधु-साध्वियों की जिज्ञासाओं को :ांत करते हुए कहा कि किसी भी स्थान से अन्यत्र जाने के लिए प्रस्थान का पथ अलग-अलग हो सकता है, लेकिन उसकी मंजिल -िरोधार्य होनी चाहिए। चाहे कोई प-िचम, उत्तर, पूर्व और दक्षिण दि-ा से गंतव्य की ओर से प्रस्थान करें। इसमें कोई गलत नहीं है, किन्तु वह पथ मंजिल तक पहुंचाने वाला होना चाहिए। यह आव-यक है। जो भी साधना पद्धति राग-द्वेश को कम करने वाली होती है उसे उत्तम की श्रेणी में रखा गया है। उन्होंने कहा कि -िश्य को कभी अपने गुरु के सामने हो-ियारी नहीं भोले मन से बात करनी चाहिए। जो बात अथवा वाकिया सत्य है तो उसे हुबहु गुरु के समक्ष रखने का प्रयास किया जाना चाहिए। सरलता से की गई बात व्यावहारिक हो सकती है। अपनी बात को सीधी सरल रखने का प्रयास करें और उससे श्रद्धा का भाव उत्पन्न करें। फिजूल में मिर्च-मसाला लगाने की जरुरत नहीं है। साहित्य में मिर्च लग सकती है, साधना में

नहीं। वर्तमान में प्र-स्त राग को छोडने की अपेक्षा उलाहना, छींटाक-ी, सेवा से हाथ छिडकने पर विजय प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। आगम में स्वाध्याय विस्तार की बात है। प्रवचन माला में :ानिवार को सम्यक्त्व की पहचान विशय पर प्रवचन होगा। संयोजन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

जीवन विज्ञान विद्यार्थी सेमिनार आजः आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में :ानिवार को सुबह साढे दस से साढे ग्यारह बजे तक तेरापंथ सभा भवन के अहिंसा समवसरण में जीवन विज्ञान विद्यार्थी सेमिनार का आयोजन होगा। जीवन विज्ञान अकादमी के मंत्री मोतीलाल डांगी ने बताया कि कार्यक्रम में कक्षा 6 से कक्षा 12 तक के विद्यार्थी ि-रकत करेंगे।

नेत्र चिकित्सा ि-विर कल

आचार्यश्री महाश्रमण के आमेट पदार्पण के उपलक्ष्य में आमेट मित्र मंडल, मुंबई द्वारा प्रेरित व अर्जुनलाल फौजमल चौधरी, आमेट-मुबंई के सौजन्य से आचार्यश्री महाप्रज्ञ नेत्र चिकित्सालय, वागदरी की ओर से रविवार को प्रातः नौ बजे से आयुर्वेद चिकित्सालय, आमेट में नेत्र चिकित्सा ि-विर आयोजित होगा। यह जानकारी व्यवस्था समिति के सह संयोजक सलील लोढा ने दी।

बी.ए. व एम.ए के छात्रों की संगोश्ठी कल

जैन वि-व भारती वि-वविद्यालय लाडनूं के पत्राचार परीक्षा केन्द्र आमेट से बी.ए व एम.ए की परीक्षाएं देने वाले वर्श 2000 से अब तक के सभी पूर्व व वर्तमान छात्र-छात्राओं की एक संगोश्ठी रविवार को दोपहर तीन बजे तेरापंथ धर्म संघ के एकाद-म् आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में होगी।

नैत्र शिविर में 70 रोगी लाभान्वित

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के तत्वावधान में आयोजित एक दिवसीय नैत्र परीक्षण का कार्यक्रम फोरम द्वारा संचालित आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ चल चिकित्सालय में किया गया। इस दौरान लगभग 70 साधु-साध्वियों एवं आम लोगों की भी आंखों का निरीक्षण किया गया। डॉ. हरिसिंह चूण्डावत ने आंखों का परीक्षण, आंखों के नम्बर निकालने के लिए घन-यामसिंह तथा चल चिकित्सालय के स्टाफ डॉ. दिलीप, डॉ. सचिन, डॉ. तौसीफ तथा लेब टेक्निशियन एन. खान की सेवाएं प्राप्त हुई। निरीक्षण के दौरान रोगियों को निःशुल्क दवाईयां भी वितरित की गई। राष्ट्रीय सहसंयोजक नवीन चौरड़िया ने बताया कि इस चिकित्सालय में रोजाना रोगियों की जांच की जाती है। रविवार को निःशुल्क चिकित्सा शिविर लगाया जाएगा, जिसमें कान, नाक गला रोग, हृदय रोग विशेषज्ञ, हड्डी रोग विशेषज्ञ, दन्तरोग विशेषज्ञ, स्पाईन एवं दर्द निवारण, शिशु रोग विशेषज्ञ एवं जनरल फिजीशियन अपनी सेवाएं देंगे।

आचार्यश्री महाश्रमण का परिवर्तित नया यात्रा पथ

आमेटः 19 जनवरी

आध्यात्म जगत के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण का आमेट से बाडमेर जिले के बालोतरा जाने का यात्रा पथ कार्यक्रम घोषित कर दिया गया है। आचार्यश्री 5 फरवरी को सेलागुडा के लिए विहार करेंगे। आचार्यश्री महाश्रमण मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के संयोजक धर्मचंद खाब्या ने बताया कि आचार्यश्री 6 फरवरी को कुंआथल, 7 को दौलाजी का खेडा, 8 को ननाणा, 9-10 को दिवेर, 11 को कितेला, 12 को चारभुजा, 13 को रीछेड, 14 को मजेरा, 15 को कांकरवा, 16 को कुंचोली, 17 को करदा, 18 को रावलिया खुर्द, 19 को गोगुन्दा, 20 को रावलियां कलां, 21 को नान्दे-ामा, 22 को पदराडा, 23 को सेमड, 24 को सायरा, 25 को मग्धा, 26 को रणकपुर, 27 को सादडी, 28 को मुण्डारा, 29 को रमणिया, 1 व 2 मार्च को रानी, 3 को बरकाणा, 4 को नाडोल, 5 को नीपलखुर्द, 6 को डेयलाना, 7 व 8 को मगरतलाव, 9 को पनोता, 10 को जोजावर, 11 को धनला, 12 व 13 को खिंवाडा, 14 व 15 को जाणुंदा, 16 को आउवा, 17 को बिठौडा, 18 को मारवाड जंक्शन, 19 को गादाणा, 20 व 21 को गुडा रामसिंह, 22 को राणावास, 23 से 25 तक सिरियारी, 26 को माण्डा, 27 को कंटालिया, 28 को मुसालिया, 29 को सोजतरोड, 30 से एक अप्रेल तक बगडी में प्रवास करेंगे। खाब्या ने बताया कि एक अप्रेल को सायं सियाट, 2 को सोजतसिटी(मरूधर केसरी धाम), 3 को बागावास, शाम को जाडन, 4 को रुपरजत विहार, 4 से 8 तक पाली, 9 को घुमटी, 10 को केरला, 11 को जैतपुरा, 12 को माण्डावास, 13 को गेलावास, 14 को मझल, 15 को करमावास, 16 को मेली, 17 को गढ सिवाना, 18 को नागणेची मंदिर, 19 को ब्रह्म धाम, 20-21 को आसोतरा, 22 अप्रेल से 21 मई तक बालोतरा, 22 जानियाना, 23-24 को कानाना, 25 को जेठंतरी, 26 से 31 मई समदडी, एक जून को जेठन्तरी, 2-3 को पारलु, 4 को उमरलाई, 5 को रामीणमुंगडा, 6 से 27 जून पचपदरा, 28 को बीच में तथा 29 जून को बाडमेर जिले के जसोल में चातुर्मास के लिए प्रवे-ा करेंगे।